भगत रविदास – सबद ३६

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥

रागु भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६७

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥
जो दीसै सो होइ बिनासा ॥
बरन सहित जो जापै नामु ॥
सो जोगी केवल निहकामु ॥१॥
परचै रामु रवै जउ कोई ॥
पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१॥ रहाउ ॥
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥
बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥
मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥
करता होइ सु अनभै रहै ॥२॥
फल कारन फूली बनराइ ॥
फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥
गिआनै कारन करम अभिआसु ॥
गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३॥
घृत कारन दधि मथै सइआन ॥
जीवत मुकत सदा निरबान ॥
कहि रविदास परम बैराग ॥
रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥

सार: विशिष्ट अनुभवों की इच्छा अक्सर तब जन्म लेती होती है जब हम उनके सुकून देने वाले प्रभाव को महसूस करते हैं। जब हम बिना ज़्यादा सोचे-समझे उन भावनाओं को फिर से पाने की कोशिश करते हैं तब यह मोह लगाव में बदल सकता है जिससे हम बार-बार उन्हीं बाहरी वस्तुओं को खोजने

लगते हैं। यह मोह आनंद को सतही साधनों से बाँध देता है जिससे उम्मीद और निराशा का एक पीड़ादायक चक्र बन जाता है। यह याद रखना ज़रूरी है कि जिन अनुभवों को हम वास्तव में तलाश करते हैं वह अतीत को दोहराने से नहीं बल्कि वर्तमान में पूर्णतः जीने से उत्पन्न होते हैं। लालसा एक विरोधाभास है, यह हमें पुरानी आदतों में फंसा सकती है और साथ ही यह संकेत भी देती है कि भीतर कुछ गहन हमें पुकार रहा है। इस प्रकार लालसा एक बंद गली भी है और एक द्वार भी, दो धार वाली दिशा-सूचक। जब हम इसे स्पष्ट रूप से देखते हैं तब मोह व लालसा एक बंधन के लगाव से बदलकर आंतरिक खोज और विकास की प्रेरक शक्ति बन जाती है।

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥

आंतरिक दृष्टि के बिना लालसा जन्म नहीं लेती। यह दर्शाता है कि मनुष्य प्रत्यक्ष अनुभूति और सहजबोध की शक्ति को कम आँककर किसी ठोस अवधारणा और रूप पर निर्भर हो जाता है जिससे चेतना सीमित हो जाती है।

जो दीसै सो होइ बिनासा ॥

जो कुछ भी दृश्य और मूर्त है, उसका नाश निश्चित है। यह विरोधाभास स्थापित करता है कि जिन रूपों पर हम बोध के लिए निर्भर करते हैं, वह स्वयं क्षणिक भ्रम हैं।

बरन सहित जो जापै नामु ॥

सामाजिक स्थिति के साथ, जो लोग ज्ञान के सार पर विचार करते हैं। यह उन ज्ञानी लोगों को संदर्भित करता है जो श्रेणीबद्ध सीमाओं से मुक्त होकर एकत्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सो जोगी केवल निहकामु ॥१॥

केवल ऐसे आध्यात्मिक रूप से सिद्ध व्यक्ति ही पूर्ण और अनियंत्रित इच्छाओं से मुक्त हैं। (१)

परचै रामु रवै जउ कोई ॥
जब कोई सर्वव्यापी चेतना से जुड़ता है और उसकी सराहना करता है तब यह सतही भक्ति से गहन, तल्लीन संबंध की ओर बदलाव का संकेत देता है।

पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१॥ रहाउ ॥
जब पारस पत्थर का स्पर्श होता है तब संदेह और द्वैत समाप्त हो जाते हैं। यह मन की कीमिया की रसायन-क्रिया का प्रतीक है जो दुविधा को प्रबुद्ध ज्ञान में रूपांतरित करता है। (१)(विराम)

सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥
शांत, अनजान मन का दोहरापन और संदेह दूर हो जाता है। यह ऐसे बदलाव को दिखाता है जिसमें आंतरिक संघर्ष और बंटी हुई सोच धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है जिससे मन स्पष्ट और एकीकृत हो जाता है।

बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥
बिना किसी द्वार के, तीनों लोकों में मौजूद चेतना में व्याप्त हो जाओ। यह आंतरिक खुलेपन को दर्शाता है जो बाहरी विधियों, निर्धारित सिद्धांतों और पाँचों इन्द्रियों के प्रभाव से मुक्त है।

मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥
हर व्यक्ति अपने मन की आदतों और संस्कारों के अनुसार आचरण रखता है। यह व्यवहार को मानसिक प्रवृत्ति से प्रभावित दर्शाता है।

करता होइ सु अनभै रहै ॥२॥
सर्वव्यापी रचनात्मक स्रोत से जुड़ने वाले, निर्भय हो जाते हैं। यह बताता है कि हम सब पूर्णतः का हिस्सा हैं और जब हम इस धारणा को स्वीकार कर लेते हैं तब स्वयं के सीमित होने का संदेह दूर हो जाता है। (२)

फल कारन फूली बनराइ ॥

फल पैदा करने के लिए फूल खिलते हैं। प्रकृति का यह नियम दर्शाता है कि स्वाभाविक रूप से, सृष्टि का हर अंश चेतना के लिए प्रयास करता है किंतु यह प्रक्रिया स्वयं अंतिम लक्ष्य नहीं है।

फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥

जब फल लगता है तब फूल मुरझा जाता है। यह संकेत करता है कि जब हमारे भीतर ज्ञान फलित होता है तब बाहरी दिखावे और आडंबर समाप्त हो जाते हैं जिससे वास्तविक चेतना उत्पन्न होती है।

गिआनै कारन करम अभिआसु ॥

ज्ञान प्राप्ति के लिए, धार्मिक अभ्यास और अनुष्ठान किए जाते हैं। यह अनुशासनात्मक कर्म को अपने आप में अंत के बजाय, लक्ष्य तक पहुँचने के साधन रूप में देखता है।

गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३॥

जब ज्ञान उदित होता है तब कर्म समाप्त हो जाते हैं। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे अंतर्दृष्टि आत्मसात होती है, बाहरी क्रियाओं की आवश्यकता शेष नहीं रहती। (३)

घृत कारन दधि मथै सइआन ॥

मक्खन निकालने के लिए बुद्धिमान दही को मथता है। यह इस विचार की पुष्टी करता है कि ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास केवल सार निकालने के लिए ही होता है।

जीवत मुकत सदा निरबान ॥

मुक्ति, जीवित रहते हुए तब ही मिल सकती है जब निरंतर दुनियावी मोह के बंधन से आज़ाद हो। इसका अर्थ है कि दुनिया के कामों में सक्रिय रूप से शामिल होते हुए भी क्षणिक भ्रमों से अलग रहने की अवस्था का पालन करना।

कहि रविदास परम बैराग ॥

रविदास कहते हैं, मन की यह अवस्था सर्वोच्च वैराग्य को दर्शाती है। यह परम आध्यात्मिक उपलब्धि को सृष्टि के अस्थायी पहलुओं से वैराग्य के रूप में पहचानती है।

रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥

जो अपने मन में सर्वव्यापी चेतना का स्मरण नहीं करते, वह दुर्भाग्यशाली हैं। (४)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास आध्यात्मिक विकास के सिद्धांत को स्पष्ट करते हैं, जैसे फल लगने के लिए फूल का झड़ना ज़रूरी है, वैसे ही चेतना के उदय के लिए बाहरी पूजा-पाठ को आंतरिक ज्ञान की गहराई में विलीन होना पड़ता है। वह कहते हैं कि किसी व्यक्ति की शारीरिक या धार्मिक तकनीकों में निपुणता सच्चे ज्ञान की पहचान नहीं है बल्कि सच्चाई के सार को समझने, अंतर्दृष्टि को अपनाने और अडिग सत्यनिष्ठा को जीवन में उतारने से ही सच्चा बोध प्राप्त होता है, जो स्वतंत्रता और निर्भयता को जन्म देता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com